BHARGAVA Insights Multidisciplinary Research Journal
ISSN: 3139-4175
Volume: 01, Issue: 01, April- June 2026
https://bhargavafoundation.in/

शिलालेखों एवं ताम्रपत्रों के आधार पर झारखंड (1200–1750 ई.) का ऐतिहासिक पुनर्निर्माण

BIMRJ
ISSN: 3139-4175 (online)
Double-Blind Peer Reviewed
Open Access Quarterly Journal
©The Author 2026

Digvijay Singh,
PhD Research Scholar,
Ranchi University, Ranchi, Jharkhand

सारांश

यह अध्ययन "शिलालेखों एवं ताम्रपत्रों के आधार पर झारखंड (1200–1750 ई.) का ऐतिहासिक पुनर्निर्माण" मध्यकालीन झारखंड के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक इतिहास को अभिलेखीय स्रोतों के माध्यम से पुनः स्थापित करने का प्रयास करता है। इस काल में नागवंशी, चेरो और सिंह जैसे क्षेत्रीय राजवंशों का उदय हुआ, जिनका विवरण इटखोरी, नवरत्नगढ़, पलामू, टांगीनाथ और सिंहभूम क्षेत्रों के शिलालेखों तथा रतनपुर, खुखरा, पालकोट, चुटिया और रामगढ़ जैसे ताम्रपत्रों में मिलता है। इन स्रोतों से स्पष्ट होता है कि झारखंड में विकेन्द्रीकृत प्रशासनिक व्यवस्था, भूमि दान प्रणाली (अग्रहार एवं देवोत्तर), तथा ब्राह्मण एवं मंदिर केंद्रित धार्मिक संरचना विद्यमान थी। साथ ही मुगल–सल्तनत कालीन संदर्भों में 'कुकरा' या 'कोकरा' के रूप में इस क्षेत्र का उल्लेख झारखंड की व्यापक राजनीतिक सहभागिता को दर्शाता है। आर्थिक रूप से यह क्षेत्र कृषि, वन उत्पाद और खनिज संसाधनों पर आधारित था, जबकि सामाजिक संरचना में जनजातीय और गैर–जनजातीय समुदायों का सह–अस्तित्व देखा जाता है। यह अध्ययन शिलालेखों एवं ताम्रपत्रों के विश्लेषण के माध्यम से झारखंड के मध्यकालीन इतिहास की बहुआयामी समझ प्रदान करता है।

शब्दकुंजी– शिलालेख, ताम्रपत्र, नागवंशी, चेरो, भूमि दान, मध्यकालीन इतिहास, प्रशासनिक व्यवस्था, जनजातीय समाज, कोकरा

***Corresponding Author**
Digvijay Singh
✉ Digvijay.singh5060@gmail.com

Article Info
Received: 29th January 2026
Final Accepted: 17th March 2026
Published: 23th April 2026

ISSN: 3139-4175

प्रस्तावना

यह अध्ययन "शिलालेखों एवं ताम्रपत्रों के आधार पर झारखंड (1200–1750 ई.) का ऐतिहासिक पुनर्निर्माण" मध्यकालीन झारखंड के इतिहास को अभिलेखीय स्रोतों के माध्यम से समझने का एक संगठित प्रयास है। इस अवधि में झारखंड क्षेत्र नागवंशी, सिंह तथा चेरो जैसे क्षेत्रीय राजवंशों के उदय और विकास का साक्षी रहा, जिनके शिलालेखों एवं ताम्रपत्रों से उनकी प्रशासनिक संरचना, भूमि अनुदान प्रणाली तथा स्थानीय जनजातीय समुदायों (जैसे मुंडा–पाहन) के साथ उनके सामंजस्यपूर्ण संबंधों का स्पष्ट चित्र मिलता है। मुगल एवं सल्तनत कालीन अभिलेखों में इस क्षेत्र को 'कुकरा' या 'कोकरा' के रूप में उल्लेखित किया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि झारखंड तत्कालीन व्यापक राजनीतिक परिदृश्य का हिस्सा था और मुगल शासकों द्वारा इस क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित करने के प्रयास भी किए गए। पलामू के चेरो राजाओं, विशेषकर मेदिनी राय के शासनकाल, तथा सिंहभूम के सिंह राजाओं के ताम्रपत्र उनके सैन्य और प्रशासनिक सशक्तीकरण को दर्शाते हैं। साथ ही, इन अभिलेखों से धार्मिक सहिष्णुता, मंदिर निर्माण, सामाजिक संरचना तथा कृषि, वन उपज, खनिज एवं हीरा उद्योग पर आधारित अर्थव्यवस्था का भी ज्ञान होता है, जिससे झारखंड के समग्र ऐतिहासिक स्वरूप का पुनर्निर्माण संभव होता है।

शिलालेखों के आधार पर झारखंड (1200–1750 ई.) का ऐतिहासिक पुनर्निर्माण

झारखंड के मध्यकालीन इतिहास (1200–1750 ई.) के पुनर्निर्माण में शिलालेख अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रामाणिक स्रोत के रूप में सामने आते हैं। इस काल में लिखित इतिहास सीमित होने के कारण शिलालेखों के माध्यम से प्राप्त सूचनाएँ राजनीतिक, प्रशासनिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक जीवन के विभिन्न आयामों को उजागर करती हैं। झारखंड के विभिन्न क्षेत्रों जैसे इटखोरी (हजारीबाग), पलामू, रांची, गुमला तथा सिंहभूमकृसे प्राप्त शिलालेख इस क्षेत्र के ऐतिहासिक विकास का स्पष्ट और तथ्यपरक चित्र प्रस्तुत करते हैं।

1. प्रमुख शिलालेखों के नाम एवं उनका महत्व– झारखंड से प्राप्त कुछ महत्वपूर्ण शिलालेख निम्नलिखित हैं–

1. **इटखोरी शिलालेख (हजारीबाग)–** धार्मिक गतिविधियों और मंदिर परंपरा का उल्लेख।
2. **नवरत्नगढ़ शिलालेख (गुमला / रांची क्षेत्र)–** नागवंशी शासकों के शासन और प्रशासन का विवरण।
3. **खुखरा (कोकरा) क्षेत्र के शिलालेख–** नागवंशी सत्ता और मुगल संपर्क का संकेत।
4. **पलामू किला शिलालेख–** चेरो राजाओं, विशेषकर मेदिनी राय के शासन का वर्णन।
5. **टांगीनाथ मंदिर शिलालेख (गुमला)–** धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रमाण।
6. **देवड़ी मंदिर शिलालेख (रांची)–** मंदिर निर्माण एवं दान परंपरा का विवरण।
7. **सिंहभूम क्षेत्र के शिलालेख–** सिंह राजाओं की स्वतंत्र सत्ता और प्रशासनिक संरचना का प्रमाण।

इन शिलालेखों से झारखंड के इतिहास के विभिन्न पहलुओं को समझने में सहायता मिलती है।

2. राजनीतिक संरचना और क्षेत्रीय राजवंशों का उदय— शिलालेखों से यह स्पष्ट होता है कि 1200—1750 ई. के दौरान झारखंड में नागवंशी, सिंह और चेरो जैसे शक्तिशाली क्षेत्रीय राजवंशों का उदय हुआ।

- **नागवंशी शासक**— नवरत्नगढ़ और खुखरा क्षेत्र के शिलालेखों से ज्ञात होता है कि नागवंशी राजाओं ने स्थानीय जनजातियों के साथ सामंजस्य बनाकर शासन किया।
- **सिंह राजवंश (सिंहभूम)**— सिंहभूम के अभिलेख उनकी स्वतंत्र सत्ता और क्षेत्रीय प्रभाव को प्रमाणित करते हैं।
- **चेरो शासक (पलामू)**— पलामू किले के शिलालेख चेरो राजाओं की सैन्य शक्ति और मुगलों के विरुद्ध उनके संघर्ष को दर्शाते हैं, विशेषकर मेदिनी राय का शासनकाल अत्यंत महत्वपूर्ण रहा।

3. प्रशासनिक व्यवस्था और भूमि अनुदान प्रणाली— शिलालेखों में भूमि दान (अग्रहार, देवोत्तर) का उल्लेख बार—बार मिलता है, जो तत्कालीन प्रशासनिक व्यवस्था को समझने में सहायक है।

- राजा द्वार ब्राह्मणों, मंदिरों और धार्मिक संस्थाओं को भूमि दान दिया जाता था।
- शिलालेखों में गाँवों की सीमाएँ, कर व्यवस्था और प्रशासनिक पदों का उल्लेख मिलता है।
- महतो (ग्राम प्रधान) और पाहन (धार्मिक प्रमुख) जैसे पद स्थानीय शासन और सामाजिक संरचना को दर्शाते हैं। यह व्यवस्था एक प्रकार की विकेन्द्रीकृत शासन प्रणाली को इंगित करती है।

4. मुगल एवं सल्तनत के साथ संबंध— शिलालेखों के साथ—साथ समकालीन अभिलेखीय साक्ष्यों से यह ज्ञात होता है कि झारखंड पूरी तरह अलग—थलग नहीं था।

- इस क्षेत्र को 'कुकरा' या 'कोकरा' नाम से जाना जाता था।
- मुगल सम्राट अकबर और जहाँगीर के काल में इस क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित करने के प्रयास किए गए।
- हालांकि, शिलालेख यह भी दर्शाते हैं कि स्थानीय शासकों ने अपनी स्वायत्तता बनाए रखी और समय—समय पर संघर्ष भी किया।

5. सामाजिक एवं जनजातीय संरचना— शिलालेखों से झारखंड की मिश्रित सामाजिक संरचना का ज्ञान होता है।

- यहाँ जनजातीय समुदायकृजैसे मुंडा, उरांव, संथालकृऔर गैर—जनजातीय समाज के बीच सह—अस्तित्व था।
- पाहन और महतो जैसे पदों का उल्लेख सामाजिक संगठन और स्थानीय प्रशासन की विशेषताओं को दर्शाता है।
- शिलालेखों से यह भी स्पष्ट होता है कि स्थानीय परंपराएँ और रीति—रिवाज शासन व्यवस्था का अभिन्न हिस्सा थे।

ISSN: 3139-4175

6. धार्मिक जीवन और सांस्कृतिक परंपराएँ– धार्मिक जीवन का चित्रण शिलालेखों में स्पष्ट रूप से मिलता है।

- इटखोरी शिलालेख बौद्ध, जैन और हिंदू धर्मों के सह–अस्तित्व को दर्शाता है।
- टांगीनाथ और देवड़ी मंदिर शिलालेख मंदिर निर्माण, पूजा–पद्धति और दान परंपरा का उल्लेख करते हैं।
- शासकों द्वारा मंदिरों को दान देना उनकी धार्मिक नीतियों और सहिष्णुता को दर्शाता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि झारखंड में धार्मिक विविधता और सांस्कृतिक समन्वय विद्यमान था।

7. आर्थिक जीवन और संसाधन– शिलालेखों के आधार पर झारखंड की अर्थव्यवस्था के बारे में भी महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है।

- कृषि, वन उत्पाद और पशुपालन प्रमुख आर्थिक गतिविधियाँ थीं।
- लौह अयस्क, तांबा और अन्य खनिजों का उपयोग धातु उद्योग में होता था।
- कुछ संदर्भों में हीरा उत्पादन (विशेषकर शंख नदी क्षेत्र) का उल्लेख मिलता है।
- भूमि दान और कर प्रणाली से आर्थिक संगठन का भी पता चलता है।

ताम्रपत्रों के आधार पर झारखंड (1200–1750 ई.) का ऐतिहासिक पुनर्निर्माण

झारखंड का मध्यकालीन इतिहास (1200–1750 ई.) प्रत्यक्ष लिखित स्रोतों की कमी के कारण आंशिक रूप से अस्पष्ट रहा है। इस संदर्भ में ताम्रपत्र अत्यंत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत हैं। ये ताम्रपत्र प्रायः भूमि दान, प्रशासनिक आदेश, धार्मिक अनुदान तथा सामाजिक संरचना से संबंधित सूचनाएँ प्रदान करते हैं। झारखंड क्षेत्र में नागवंशी, चेरो, तथा अन्य स्थानीय शासकों द्वारा जारी ताम्रपत्रों के आधार पर इस कालखंड का ऐतिहासिक पुनर्निर्माण किया जा सकता है।

1. ताम्रपत्रों का परिचय और महत्व– ताम्रपत्र प्राचीन और मध्यकालीन भारत में शासकों द्वारा जारी आधिकारिक दस्तावेज थे, जिन पर भूमि दान, कर–मुक्ति, तथा प्रशासनिक आदेश अंकित होते थे। झारखंड में इनका उपयोग विशेष रूप से ब्राह्मणों, मंदिरों और धार्मिक संस्थाओं को भूमि प्रदान करने के लिए किया जाता था।

इनसे हमें निम्नलिखित जानकारी मिलती है–

- शासकों के नाम और वंशावली
- प्रशासनिक व्यवस्था
- भूमि व्यवस्था और कर प्रणाली
- धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन

2. प्रमुख ताम्रपत्रों के नाम– झारखंड क्षेत्र से प्राप्त कुछ महत्वपूर्ण ताम्रपत्र निम्नलिखित हैं–

- रतनपुर ताम्रपत्र (नागवंशी काल)

- खुखरा (खूंटी) ताम्रपत्र
- पालकोट ताम्रपत्र
- चुटिया (रांची) ताम्रपत्र
- रामगढ़ ताम्रपत्र
- चेरो शासकों के ताम्रपत्र (पलामू क्षेत्र)

ये ताम्रपत्र मुख्यतः नागवंशी शासकों और चेरो राजाओं द्वारा जारी किए गए थे।

3. **राजनीतिक संरचना का पुनर्निर्माण**– ताम्रपत्रों से यह स्पष्ट होता है कि 1200–1750 ई. के दौरान झारखंड में मुख्यतः नागवंशी शासकों का प्रभुत्व था।

- नागवंशी शासकों की राजधानी पहले खुखरा (खूंटी) और बाद में रतनपुर/डोरंडा रही।
- ताम्रपत्रों में शासकों की वंशावली और उपाधियाँ जैसे "महाराजाधिराज", "परमेश्वर" आदि मिलती हैं।
- पलामू क्षेत्र में चेरो राजाओं का भी प्रभाव था, जिनका उल्लेख ताम्रपत्रों में मिलता है।

इस प्रकार ताम्रपत्र राजनीतिक सत्ता के विकेन्द्रीकरण और स्थानीय राजवंशों की उपस्थिति को दर्शाते हैं।

4. **प्रशासनिक व्यवस्था**– ताम्रपत्रों में प्रशासनिक पदों और इकाइयों का उल्लेख मिलता है–

- गाँव (ग्राम) प्रशासन की मुख्य इकाई था।
- मुखिया, पटवारी, और अन्य स्थानीय अधिकारी भूमि और कर व्यवस्था संभालते थे।
- ताम्रपत्रों में दान की भूमि की सीमाएँ स्पष्ट रूप से वर्णित होती थीं, जिससे प्रशासनिक नियंत्रण का पता चलता है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि झारखंड में एक संगठित प्रशासनिक व्यवस्था विद्यमान थी।

5. **भूमि व्यवस्था और आर्थिक स्थिति**– ताम्रपत्रों का सबसे महत्वपूर्ण पहलू भूमि दान से संबंधित जानकारी है–

- शासक ब्राह्मणों और मंदिरों को कर–मुक्त भूमि दान करते थे।
- दान में दी गई भूमि को "अग्रहार" या "ब्राह्मदेय" कहा जाता था।
- कृषि झारखंड की मुख्य आर्थिक गतिविधि थी, जिसका उल्लेख ताम्रपत्रों में मिलता है।
- खनिज संसाधनों (विशेषकर लौह और तांबा) के उपयोग के संकेत भी अप्रत्यक्ष रूप से मिलते हैं।

इससे पता चलता है कि उस समय की अर्थव्यवस्था कृषि–आधारित थी, जिसमें धार्मिक संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

6. **सामाजिक संरचना**– ताम्रपत्र सामाजिक संरचना के बारे में भी महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं–

- समाज में वर्ण व्यवस्था का प्रभाव था, विशेषकर ब्राह्मणों का उच्च स्थान।

- भूमि दान मुख्यतः ब्राह्मणों को दिया जाता था, जिससे उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ती थी।
- जनजातीय समाज (आदिवासी समुदाय) भी इस क्षेत्र में निवास करता था, हालांकि उनका उल्लेख सीमित रूप में मिलता है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि झारखंड में जनजातीय और ब्राह्मणीय संस्कृतियों का सह–अस्तित्व था।

7. धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन– ताम्रपत्र धार्मिक गतिविधियों का भी उल्लेख करते हैं–

- अधिकांश दान हिंदू धर्म के मंदिरों और ब्राह्मणों को दिए गए थे।
- शिव, विष्णु और देवी की पूजा का उल्लेख मिलता है।
- ताम्रपत्रों में संस्कृत भाषा और ब्राह्मी/नागरी लिपि का प्रयोग हुआ है।

यह दर्शाता है कि इस काल में ब्राह्मणीय संस्कृति का प्रभाव बढ़ रहा था।

8. ताम्रपत्रों की सीमाएँ– हालांकि ताम्रपत्र महत्वपूर्ण स्रोत हैं, लेकिन इनकी कुछ सीमाएँ भी हैं–

- ये मुख्यतः शासकों और उच्च वर्ग के दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं।
- जनजातीय समाज और सामान्य जनता के जीवन का सीमित विवरण मिलता है।
- कई ताम्रपत्र अपूर्ण या क्षतिग्रस्त अवस्था में मिले हैं।

इसलिए ऐतिहासिक पुनर्निर्माण के लिए अन्य स्रोतों (शिलालेख, पुरातात्विक साक्ष्य) का भी सहारा लेना आवश्यक होता है।

निष्कर्ष

शिलालेखों एवं ताम्रपत्रों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि 1200–1750 ई. के दौरान झारखंड एक संगठित और विकसित क्षेत्रीय राजनीतिक इकाई के रूप में विद्यमान था, जहाँ नागवंशी, चेरो और सिंह जैसे राजवंशों ने प्रभावी शासन स्थापित किया। इन अभिलेखों से विकेन्द्रीकृत प्रशासन, भूमि दान प्रणाली तथा धार्मिक संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका का प्रमाण मिलता है। साथ ही, जनजातीय एवं गैर–जनजातीय समाजों के सह–अस्तित्व से एक समावेशी सामाजिक संरचना का संकेत प्राप्त होता है। आर्थिक दृष्टि से कृषि, वन संसाधन एवं खनिज आधारित गतिविधियाँ इस क्षेत्र की प्रमुख आधारशिला थीं। यद्यपि ताम्रपत्र और शिलालेख मुख्यतः शासकीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं, फिर भी ये झारखंड के मध्यकालीन इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण और विश्वसनीय स्रोत हैं। इस प्रकार, इन अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर झारखंड का इतिहास बहुआयामी और समृद्ध स्वरूप में समझा जा सकता है।

सदंर्भ–ग्रन्थ सुची

1. आदित्य, ललित। (2022)। झारखंड के ऐतिहासिक पुरातत्व पर एक टिप्पणीः अभिलेखशास्त्र एवं मुद्राशास्त्र के विशेष संदर्भ में। बुलेटिन ऑफ द डेक्कन कॉलेज पोस्ट–ग्रेजुएट एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट, 82, 45–52।

2. आदित्य, एल. (2018)। झारखंड में शिलालेखः एक प्रारंभिक अध्ययन। विरासतः पुरातत्व में बहुविषयक अध्ययन जर्नल, 6, 1067–1079। (प्रकाशितः अक्टूबर 2018)
3. आदित्य, ललित. (2014). झारखंड के अभिलेख। (अप्रकाशित एम.ए. शोध प्रबंध), रांची विश्वविद्यालय, झारखंड।
4. सिन्हा, अरुण. (2014). झारखंड में जनजातीय राजव्यवस्था और राज्य–निर्माणः नागवंशियों का एक अध्ययन। भारतीय इतिहास कांग्रेस की कार्यवाहियाँ, 75, 230–238।
5. ओझा, देवेंद्र नाथ. (2011). झारखंड के अभिलेखों का सांस्कृतिक अध्ययन। दिल्लीः शिवालिक प्रकाशन।
6. विरोत्तम, बी. (2006). झारखंडः इतिहास एवं संस्कृति. पटनारू बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी.
7. वर्मा, के. के. (2006). झारखंड के ताम्रपत्र एवं शिलालेखः एक ऐतिहासिक विश्लेषण।
8. अख्तर, नसीम (संपा.). (2001). पटना म्यूज़ियम कैटलॉगः टेराकोटास एंड मेटल इमेजेज़। पटनाः पटना संग्रहालय।
9. तिवारी, श्याम सुंदर. (2002). झारखंड के प्राचीन राजवंश एवं ताम्रपत्र। पटनाः बिहार ग्रंथ केंद्र।
10. मिश्रा, शशांक. (2000)। छोटानागपुर के नागवंशी शासकः उनके शिलालेखों का एक अध्ययन। जर्नल ऑफ़ हिस्टोरिकल रिसर्च, 42(1), 15–29।